DRAVIDIAN UNIVERSITY
Centre for Off-Campus Education & Research
Syllabus for M.Phil/Ph.D Hindi
Paper II: Broad Field

इकाई - I

- भक्तिकाव्य - स्वरूप और भेद, निर्गुण और सगुण का संबंध : साम्य और वैषम्य
  कबीर - निर्गुण का स्वरूप, रहस्य साधना, कबीर का समाज दर्शन और उनकी प्रासंगिकता, कबीर कवि के रूप में।
  जायसी - सांस्कृतिक दृष्टि, प्रेम भावना, प्रकृति चित्रण, रूपक तत्व
  सूरदास - भक्ति भावना, बाल लीला वर्णन का वैशिष्ट्य, भ्रमरगीत
  तुलसीदास - भक्ति दर्शन, सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि, लोकमंगल.
- रीतिकाव्य - नामकरण एवं वर्गीकरण, रीतिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रीतिकाव्य की काव्य धारायें
  केशवदास - आचार्यत्व, काव्य दृष्टि, संवाद योजना
  बिहारी - सौन्दर्य भावना, बहुज्ञता, काव्य कला
  भूषण - युगबोध, काव्य की अन्तर्वस्तु, काव्य कला
- घनानंद - रीतिमुक्त स्वछंद काव्यधारा, घनानन्द की प्रेमव्यंजना, विरहानुभूति

इकाई II

- आधुनिक काव्य - आधुनिकता की अवधारणा, पुनर्जागरण और भारतेन्दु, भारतेन्दुयुगीन काव्य प्रवृत्तियाँ, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और नवजागरण
  द्विवेदीयुगीन काव्य प्रवृत्तियां, हरिऔध की काव्य कृतियां, प्रियप्रवास की राधा.
  मैथिलीशरणगुप्त की काव्यकृतियाँ, गुप्तजी का राष्ट्रीयभावना
- छायावाद - प्रवृत्तियाँ, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि, प्रकृति चित्रण, काव्यगत विशेषताएं।
- विभिन्न वाद और नई कविता - वैचारिक पृष्ठभूमि, प्रगतिवाद - सामाजिक दृष्टि नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल

- प्रयोगवाद - व्यष्टि चेतना, अज्ञेय - प्रयोगधर्मिता और काव्य भाषा।
- समकालीन कविता - काल संबंधित और लोक संस्पर्शित, रघुवीर सहाय, राजनीतिक चेतना, काव्य भाषा।

इकाई - III

उपन्यास और कहानी - गल्प और इतिहास, प्रेमचंदयुगीन अध्ययन, प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास, आंचलिक उपन्यास के मूल तत्व, गोदान, शेखर एक जीवनी, मैला आंचल, प्रेमचंद की कहानी कला, प्रेमचन्दोत्तर कहानी, नई कहानी, कहानी शिल्प

नाटक और निबंध -

नाटक स्वरूप और तत्व, हिंदी नाटक और भारतेन्दु, प्रसाद के नाटक, प्रसादोत्तर नाटक, हिन्दी निबंध का विकास क्रम, प्रमुख निबंधकारों की निबंध कला, बालकृष्ण भट्ट, रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र

इकाई IV

काव्यशास्त्र और आलोचना

- काव्य के लक्षण -
- विविध सम्प्रदाय - रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य। रस का स्वरूप और साधारणीकरण
- हिन्दी आलोचना - रामचंद्र शुक्ल और उनके आलोचनात्मक प्रतिमान, हजारीप्रसाद द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी, डा. नामवर सिंह, समकालीन आलोचना
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र - प्लेटो, अरस्तु, लोंजाइनस, क्रोचे का अभिव्यंजनावाद, आई. ए. रिचर्ड्स का सम्प्रेषण सिद्धांत, नई समीक्षा

इकाई — V

काव्य कृतियों की व्याख्या

कबीर - संपादक हजारी प्रसाद द्विवेदी

जायसी ग्रन्थावली - संपादक रामचंद्र शुक्ल

तुलसीदास 'रामचरितमानस' उत्तरकाण्ड

जयशंकर प्रसाद - कामायनी श्रद्धा एवं इड़ा सर्ग

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला - राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता

उपन्यासों एवं नाटकों की व्याख्या

गोदान - प्रेमचंद, अज्ञेय का उपन्यास शेखर एक जीवनी भाग 1

चन्द्रगुप्त - जयशंकर प्रसाद, आधे अधूरे मोहन राकेश).

DRAVIDIAN UNIVERSITY

Model Question Paper for M.Phil/Ph.D Hindi

Paper II: Broad Field

Time: 3 Hours Max marks: 100

Answer Any **Five** Questions

All Questions Carry Equal Marks

समय

पूर्णांक - 100.

अंक

प्रश्न 1. "सूर के भ्रमरगीत में जितनी सहृदयता एवं भावुकता है उतनी ही चतुरता एवं वाग्विदग्धता भी है।" इस कथन को सिद्ध कीजिए। 20

अथवा

तुलसी की भक्ति पद्धति की विशेषताएँ बताइए?

प्रश्न 2. 'छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।" कैसे? स्पष्ट कीजिए। 20

अथवा

निराला और मुक्त छंद एवं पंत का प्रकृति चित्रण पर टिप्पणी लिखिए।

प्रश्न 3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 20

अ) प्रसाद के नाटक

ब) हिन्दी कथा साहित्य में दलित चेतना

स) हिन्दी निबंध का विकास क्रम

प्रश्न 4. आचार्य रामचन्द्रशुक्ल की समीक्षा पद्धति की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए 20

अथवा

अलंकार एवं उनके भेद उदाहरण सहित लिखिए।

प्रश्न 5. अंक

निम्न अवतरण का अर्थ काव्य सौन्दर्य सहित स्पष्ट कीजिए : 20.

साधो, देखो जग बौराना।
साँची कहौं तौ मारन धावैं झूठे जग पतियाना ।
हिन्दू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना ।
आपस में दोऊ लड़ मरतु हैं मरम कोई नहिं जाना ।
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी प्रात करें असनाना ।
आतम-छोड़ि पषानै पूजैं तिनका थोथा ज्ञाना ।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना ।
पीपर-पाथर पूजन लागे तीरथ-वर्त भुलाना ।
माला पहिरे टोपी पहिरे छाप-तिलक अनुमाना ।
साखी सब्दै गावत भूले आतम खबर न जाना ।
घर घर मन्त्र जो देन फिरत हैं माया के अभिमाना ।
गुरुवा सहित सिष्य सब बूड़े अन्तकाल पछिताना ।
बहुतक देखे पीर औलिया पढ़ै किताब-कुराना
करै मुरीद कबर बतलावैं उनहूँ खुदा न जाना ।

अथवा

निम्न अवतरण की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए एवं इसके साहित्यिक सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए ।

"विवाह को मैं सामाजिक समझौता समझता हूँ और उसे तोड़ने का अधिकार न पुरुष को है, न स्त्री को। समझौता करने के पहले आप स्वाधीन हैं, समझौता हो जाने के बाद आपके हाथ कट जाते हैं।"

— x — x —